CLASS-26: Summary

1. हमने जाना कि बाहरी सामग्रियों की अनुकूलता से ही सुख मिलता है
    a. भीतर **सुख का परिणाम** सातावेदनीय की उदीरणा से महसूस होता है
    b. बाहरी सामग्रियों के मिलने पर joyfulness, happiness की feeling होती है
    c. जैसे ठंड के समय में गर्म-गर्म भोजन से इन्द्रियाँ प्रसन्न हो जाती हैं
    d. ठंड के दिनों में ठंडा भोजन वातकारी और शारीरिक दर्द का कारण होता है
2. इस सूत्र के सिद्धांत सभी संसारी प्राणियों पर बिल्कुल fit होते हैं
3. बाह्य पदार्थों के होने पर, अंतरंग में
    a. सातावेदनीय के उदय-उदीरणा से उत्पन्न सुखजन्य परिणाम को **सुख**
    b. और असाता की उदीरणा से उत्पन्न **पीड़ा को दुःख** मानता है
    c. वह निरंतर सुख प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है
4. हमने जाना कि हम कितनी भी अनुकूलता बनाने की कोशिश करें, प्रतिकूलता सामने आ ही जाती हैं
    a. और उस प्रतिकूलता में निमित्त चीजें हमारे लिये दुःख का कारण होती हैं
    b. जैसे यदि हम सुख से बैठे हैं और कोई अचानक उधारी मांगने, परेशान करने या हमला करने आ जाये
    c. तो उस व्यक्ति की उपस्तिथि भी हमारे लिए दुःख का निमित्त है
    d. उसे देखते ही हम दुखी या क्रोधित हो जायेंगे
    e. उसके आते ही असाता की उदीरणा शुरु हो जायेगी
5. इसलिये सुख पाने के लिए आदमी हमेशा अच्छे-अच्छे की कोशिश करता है
    a. जैसे अच्छा परिवार
    b. आज्ञाकारी, संस्कारी बच्चे

c. प्रतिकूलता रहित अच्छा घर
d. निरन्तर वृद्धि को प्राप्त व्यापार

6. हमने जाना कि सुख-दुःख को 'पर' से उत्पन्न जानना ही **भेद विज्ञान** है
    a. इनकी उत्पत्ति बाहरी निमित्त जैसे शरीर, कोई व्यक्ति, अचेतन वास्तु आदि के कारण होती हैं
    b. अतः हमें इनमें समता रखनी चाहिए
    c. **भेद विज्ञान** से हम दुःख पहुंचाने वाली परिस्थिति में विचलित नहीं होते
    d. क्योंकि वो चीजें अपने से अलग हैं

7. जीवन और मरण भी पुद्गल का उपकार है
    a. क्योंकि आयु कर्म के उदय तक ही जीवन है
    b. और इसकी पूर्णता होने पर मरण हो जाता है
    c. शरीर छूट जाता है
    d. जब तक शरीर होता है
    e. तभी तक हम हैं, परिवार और रिश्तेदार हैं
8. आज हम दूसरे के लिए जीने को अच्छी मानसिकता मानते हैं
    a. जैसे माता-पिता अपने बच्चों के लिए जीते हैं
        i. हमें जो करना था हमने कर लिया
        ii. अब वे बड़े हो जाएँ
        iii. settle हो जाएँ
    b. ये पराश्रित सोच है
    c. और चिंता का कारण है
9. **रोगी महिला** के उदाहरण से मुनि श्री ने समझाया कि
    a. अच्छे ढंग से निश्चिंत जीने के लिए अपना attitude change करना होगा

b. बच्चों के लिये नहीं अपने लिए जीना होगा

c. बच्चों के लिये जीने से

i. उनकी चिंता पड़ेगी

ii. दुःख बढेगा

iii. और रोग बढेगा

d. Mentality बदलने से निश्चिंतता आयेगी

e. तो रोग ठीक होगा

f. रोग अपने ही भावों से cure होगा

g. अतः स्वयं के लिए जीवन जीना ही सुखदायी है

10. Cancer, Tumor, जलोदर आदि रोगों से पीड़ित लोगों के लिए मरण भी उपकार है

a. क्योंकि वो इन दुखों से छुडाएगा

b. और अगर समाधिमरण हो जाये तो

c. जन्म-मरण के चक्कर से भी छूटा जा सकता है

11. जन्म-मरण में हम एक पक्ष को तो देखते हैं, दूसरे पक्ष से घबराते हैं,

a. जन्म तो सब चाहते हैं

b. उसे जन्मदिन कहते हैं

c. पर मरण इतना बुरा लगता है कि उसे **मरणदिन** नहीं कटे कहते

d. पुण्यतिथि कहते हैं

e. इसमें पुण्य क्या है?

12. हमने जाना कि जन्म-मरण पुद्गल की व्यवस्था है

a. मरण हुये बिना जन्म नहीं होगा

b. जन्म और मरण के बिना संसार नहीं होगा

c. बिना संसार के मोक्ष क्या होगा?

d. इस तरह पूरी व्यवस्था ही बदल जायेगी

e. इसलिए मरण व्यवस्था को स्वीकार करो